International Journal of Applied Research 2020; 6(2): 348-349

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(2): 348-349
www.allresearchjournal.com
Received: 15-12-2019
Accepted: 18-01-2020

सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट,
जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Correspondence Author:
सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट,
जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

कलश यात्राः एक सामाजिक उपन्यास

सोनू कुमार झा

प्रस्तावना

मैथिली साहित्यमे उपन्यास आधुनिक विधा थिक। किन्तु आब ई नब नहि अछि। उपन्यास लगभग अपन सय बर्षसँ बेसीक यात्राा कऽ चुकल अछि। एहि अवधिमे कएकटा उपन्यास एहन आयल जकरा पाठक हाथो–हाथ लेलक। ओकर कएक संस्करण भेल आ छुहि उड़िया गेल। आ कएकटा उपन्यास एहनो आयल जे उपन्यासक लिस्टमे अपन नाम दर्ज करौलक। मैथिली उपन्यासक भण्डारकेँ भरबाक काज कएलक।

बदलैत समयक संग साहित्यमे सेहो नऽब–नऽब प्रयोग होइत रहल अछि। नऽब–नऽब लेखक लोकनि अयलाह अछि। जिनक नऽब सोच नऽब विचारसँ मैथिली उपन्यास साहित्य समृद्ध भेल अछि। वर्तमान पीढ़ीक लेखक लोकनिमे सेहो कएकटा नाम अभरैत अछि। एहि क्रममे साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कारसँ सम्मानित ऋषि बशिष्ठक नाम सेहो अबैत अछि। ओना तँ ऋषि बशिष्ठ नाटकक लोक छथि, मुदा अधिकारीक रूपसँ बाल साहित्य पर हिनका जबर्दस्त पकड़ छनि। बाल साहित्यमे तीनटा उपन्यास, दूटा कथा–संग्रह, एकटा अनुदित कथा–संग्रह प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त दूटा कथा–संग्रह, एक गोट नाटक सेहो प्रकाशित छनि। हालहिमे हिनक एक गोट उपन्यास ‘कलश–यात्राा’ सेहो प्रकाशित भेल अछि। हिनक सभ पुस्तक पाठकक मोन पर अपन छाप छोड़ने अछि। एहिठाम हम हिनक कलश–यात्राा पर गप्प करब।

कलश–यात्राा एकटा सामाजिक उपन्यास अछि। कृषक वर्गक जे चिन्ता अछि तकरा लेखक एहि उपन्यासमे उठौलनि अछि। आजुक बाजारीकरणक युगमे कृषि योग्य भूमि बिलायल जा रहल अछि। ओहि भूमि पर बड़का–बड़का अट्टालिका ठाढ़ कएल जा रहल अछि। डुप्लेक्स–मल्टीप्लेक्स, मॉल खूजि रहल अछि, चाहे तँ बड़का–बड़का सरकारी भवन बनि रहल अछि।

एहना स्थितिमे कृषक वर्ग कतऽ जायत? ओ की खायत? ओकर बाल–बच्चा कोना जीतैक? तकर फिकिर कहाँ ककरो छैक! एहने समयमे ऋषि बशिष्ठ सन साहित्यकारकेँ ओकर चिन्ता भेलनि आ ‘कलश–यात्राा’ रूपमे ओकर विरुद्ध अपन शब्द–विद्रोह ठाढ़ कऽ देलनि।

ई बात सर्वविदित अछि जे कोनो युगमे, कोनो समयमे नव–युवकेँ द्वारा समाजमे परिवर्तन आयल अछि। नव–युवक लोकनि नव परम्परा गढ़लनि अछि। जड़ताकेँ तोड़लनि अछि। से एहु उपन्यासमे एस.एस.बी. कैम्प बनयबाक लेल सरकार द्वारा जखन गामक उपजाउ जमीन अधिग्रहण कयल जाइत अछि तखन लालटुन सनक नवयुवक ओकर विरुद्ध अपन अवाज उठबैत अछि। ओ गामक सभ लोककेँ एकर विरोधमे एकजुट करऽ चाहैत अछि। ओ अपन अभियानमे सफल होइतो अछि। गामक कृषि–भूमिकेँ अधिग्रहणसँ बचा लैत अछि। ताहि लेल ओकरा संघर्ष करऽ पड़ैत छैक सरकारसँ सेहो आ अपन गाँवक भूमि दलालसँ सेहो। कारण, गाम तँ गाम होइत अछि। चाहे ओ उपन्यासक प्रहारपुर गाम हो, आकि आन कोनो गाम। गामक सभ लोक कोनो मुद्दा पर एकजुट नहि भऽ सकैत अछि। किछु लोक ओकर पक्ष तँ किछु लोक ओकर विपक्षमे होइत छैक। ताहूमे एखनुक समयमे जखन हर दस व्यक्तिमे एक व्यक्ति भूमि दलाल अछि, ताहिठाम लालटुनक संग ओ किएक देत। ओकर संग दैत अछि ओहन लोक जे भूमिकेँ कोड़िकऽ अपन जीवन गुदस्त करैत अछि। एहिठामसँ शुरू होइत अछि कलश–यात्राक जद्दोजहद।

जखन अधिकारी लोकनि आबिकऽ गौंवाँ लोकनिकेँ जमीन देबाक लेल कहैत छथि, ओहिसँ गौंवाँ सभकेँ होबयवाला फायदाक विषयमे बुझबैत छथि ‘रोजगार भी बहुत क्रिएट होगा आपके गाँव में।... इतना जो कन्सट्रक्शन का काम चाहे और कोई भी... उसमें मजदूर तो चाहिये न! वो तो यहीं का होगा।’ [1] ई बात लालटुनकेँ नहि पचैत छैक। ओ बाजि उठैत अछि ‘माय बदलिकऽ डायन! अपन जमीन सरकारकेँ दऽ दिअ आ सरकारक इशारा पर मजदूरी करू!’ मुदा लालटुनकेँ एकर विरोध करब महग पड़ैत छैक। झुम्मर जे गामक उपजाउ जमीन बेचि देबाक पक्षमे अछि, लालटुन ओकर दुश्मन बनि जाइत अछि। ओना लालटुनसँ ओकर पुरान दुश्मनी छैक। से उपन्यासमे फरियायल नहि अछि।

एक दिन लालटुनक कान–कपाड़ फोड़ि दैत अछि तैयो लालटुन अपन जिद्द नहि छोड़ैत अछि। अंततः ओ सभकेँ एकजुट कऽ लैत अछि। अपन गामक जमीन बचा लैत अछि। ओ नारा लगबैत अछि 'माटिक रक्षा करबै हम, जा धरि जिनगी लड़बै हम!' [3] ओकर संकल्पक आगू जिला प्रशासन झूकि जाइत अछि। लालटुनक जीत होइत अछि।

एहि उपन्यासमे मुख्य कथाक संग–संग एक गोट उपकथा सेहो चलैत अछि। ओ कथा अछि गंगा–यमुनी तहजीबक कथा। जकर सपना हमरा लोकनि देखैत छी। रहरहाँ ओकर गुणगान सेहो करिते छी, मुदा वास्तविकता की अछि, तकरा जनबाक लेल एहि उपन्यासकेँ पढ़ब जरूरी अछि। पढ़ब एहु लेल जरूरी अछि जे मात्रा किछुये लोक अपन वर्चस्व कायम रखबाक लेल अपन राजनीति चमकबैत देखाओल गेल अछि। जे प्रहारपुर गाम, जतय उपन्यासक समूचा घटना घटित भेल अछि ओहि प्रहारपुर गाममे एकगोट राधा–कृष्ण मन्दिर अछि, जकर जीर्णोद्वार करबाक छैक। समुच्चा गौंवा ताहि लेल एकजुट होइत अछि। की हिन्दु की मुसलमान, सभमिलि कऽ ओकर निर्माण करऽ चाहैत अछि। सभ कियो चन्दा दैत अछि। एतऽ धरि, जखन मन्दिरक निर्माण भऽ रहल छल तँ ओकर एकटा मुख्य स्तम्भक खर्च सुलेमान उठबैत अछि आ झुम्मर सनक लोक बाजि उठैत अछि 'मोहम्मद सुलेमान, मुख्य द्वारिक दोसर स्तम्भक खर्च उठा लेलनिहेँ! जय श्री राधे, जय श्री कृष्ण।' [4]

मुदा, से झुम्मर सनक लोककेँ ई बात कोना पचतै। ओ तँ हिन्दू–मुसलमानमे फूट कऽ कऽ अपन राजनीतिक रोटी सेकऽबला अछि। तँ मन्दिरक ओहि पायाकेँ जकर दाता मुसलमान छल तकरा तोड़बा दैत अछि। ओतबे नहि, सामाजिक सौहार्द्र बिगाड़बाक लेल महजिद पर लागल लाउडस्पीकरकेँ थकुचबा दैत अछि। एहि घटनासँ समूचा गाम छगुन्तामे पड़ि जाइत अछि 'छगुन्ताबला बाते छलैक! एके रातिमे पच्छिम आ पूब दुनू बगलमे एहन भारी घटना भेल।' [5]

वर्तमान समयमे इएह काज तँ राजनेता लोकनि कऽ रहल छथि। तैयो जखन मन्दिरमे राधाकृष्णक मूर्ति स्थापित करबाक लेल कलश–यात्राा निकालल जएबाक योजना बनैत अछि, ओहि लए रिक्शा समुचा गाममे घुमिकऽ रजिस्ट्रेशन सेहो करैत अछि। कलश उठयबाक समयमे कलश लऽ कऽ ओ सभ बैसल रहैत अछि। लेकिन ओकर नाम नहि पुकारल जाइत छैक। ओकरा सभकेँ कहल जाइत छैक जे तोँ सभ मुसलमान छेँ तेँ कलश नहि उठा सकैत छेँ। एहि पर मन्दिरक मुख्य पुजारी वैदिकजीसँ नगमा पुछैत अछि 'एहन कोन शास्त्रा छैक जाहिमे हमरा सभकेँ शामिल करबाक निषेध छैक दादू?' [6]

वास्तवमे कोनो मन्दिर आ की महजीद तँ सार्वजनिक होइत अछि। मने सभक। तखन फेर ओ कोनो जाति विशेषक कोना भऽ सकैत अछि। हमर समाज तँ समरस अछि ते तऽ छठिमे मुसलमान सेहो पानिमे ठाढ़ होइत छथि। तँ दरगाह पर हिन्दू सेहो चादरि चढ़बैत छथि। उपन्यासमे नजराना वैदिक जीसँ कहैत अछि 'होउ ने दादू! आइ एकटा नऽब परम्पराक शुरुआत अहाँ कऽ दियौ ने दादू जान!' [7] ओकर बातसँ प्रभावित भऽ कऽ वैदिक जी कलश–यात्राक लेल शंख फुकि दैत छथि आ उपन्यास अपन लक्ष्यकेँ पाबि लैत अछि। वास्तवमे आजुक समयमे जखन चारूदिश वैमनस्यता पसरल अछि ताहिठाम आपसी मेल–जोलक गप्प करैत कलश–यात्राा सफल भेल अछि।

एहि उपन्यासमे कएकटा छोट–छोट कथा सभ अछि, जे रोचक अछि। पात्राोचित भाषाक प्रयोग भेल अछि। सभ गाममे एकगोट एहन व्यक्ति होइत छथि जिनकर बजबाक टोन लोककेँ गुदगुदबैत अछि। एहि उपन्यासमे सेहो एकटा पात्रा छथि अजोधी मिसर। जिनकर बाजब लोककेँ हँसबैत अछि। हुनके टोनसँ गुदगुदाइत उपन्यास आरम्भ होइत अछि 'तँ मटकूरीमे मूतिकऽ तोरा नानीकेँ भार पठा दितियौ।' [8] समूचा उपन्यासक रोचकता अयोधीये मिसर पर टिकल अछि। जे पाठककेँ बान्हिकऽ रखने रहैत अछि, ताहिमे उपन्यास सफल भेल अछि।

जखन हम उपन्यासक कसबट्टी पर कसैत छी तखन कलश–यात्राा कनेक झुझुआन लगैत अछि। असलमे उपन्यासक जे नायक होइत अछि, ओकर सम्पूर्ण जीवनक घटनाक्रम उपन्यासमे रहैत अछि। जेना कोनो नेना डेगा–डेगी दैत धीरे–धीरे बढ़ैत अछि। जहिना ओकर जीवन धीरे–धीरे विकास होइत छैक, ताहिना क्रमशः उपन्यासमे सेहो होइत अछि। एहिमे कोनो घटना शनैःशनैः घटैत विस्तार रूप लैत अछि। से एहि उपन्यासमे तेहन सन नहि लगैत अछि। एहि उपन्यासक मुख्यपात्रा लालटुन अछि। मुदा ओकर चरित्रामे पहिनेसँ कोनो क्रांतिकारी स्वभाव नहि देखायल गेल अछि। जखन लालटुनक कपाड़ फोड़ि दैत अछि तखन ओकर कॉलेजक दोस्त सभ अबैत अछि ओकरासँ भेंट करय 'मोटरसाइकिलसँ कॉलेज युनिवर्सिटीक छात्रा नेता सभक जुटान भेल लालटुनक जिगेसा करबाक लेल।' [9] मुदा लालटुन उपन्यासमे कहियो कॉलेज की युनिवर्सिटी नहि जाइत अछि, से कोना भऽ सकैत अछि।

तहिना एहि उपन्यासमे संग–संग एकगोट प्रेम कथा सेहो चलैत अछि लालटुन आ पायलक प्रेम कथा। ई निश्छल प्रेम थिक। पायल सदिखन लालटुनक ढाल बनिकऽ रहैत अछि। पायल अपन बाप मने झूमर मने लालटुनक दुश्मनसँ रक्षा करैत अछि। गाममे जखन एकबेर नाटक खेलेबाक बहन्ने लालटुनकेँ मारबाक प्लान झूमर बनबैत अछि तऽ पायल सुनि लैत अछि आ पायल लालटुनकेँ आगाह कऽ दैत अछि 'लालटुन, हमरा पता ने किएक एहिमे किछु षड्यंत्रा लगैए।' [10] एहि उपन्यासमे एकरा दुनूकेँ प्रेमकेँ विस्तार नहि देल गेल अछि। ई प्रेम अपन परिधि विस्तारक माँग करैत अछि। तथापि एतबा तँ अवश्य जे मैथिली साहित्यमे जे नव लेखनमे रोचकताक अभाव अछि ताहि रोचकताकेँ ई उपन्यास पूरा कएलक अछि। पाठकक स्तर पर सेहो ई सफल उपन्यास अछि। मैथिली साहित्यमे जे पाठकक अभावक आरोप लगैत अछि तकर ई खण्डन करैत अछि। पाठक एकरा ताकि–ताकिकऽ पढ़त से हमरा विश्वास अछि।

ओना जे हो, एतबा तँ अवश्य जे आजुक समयमे मैथिली उपन्यासक भण्डार जे खुद्दी–मेरखीसँ भरल जा रहल अछि ताहिमे कलश–यात्राा गमकौआ बासमती चाउरक काज करत।

संदर्भ संकेत

1. 35 कलश यात्राा
2. 35''
3. 137''
4. 25''
5. 44''
6. 151''
7. 155''
8. 07''
9. 78''
10. 105''